



Original Article

२१ वी सदी के सिनेमा के गीतोंमें मन का विमर्श

प्रा. अनंत अर्जुन निकम

सहायक प्राध्यापक एवं अध्यक्ष, संस्कृत विभाग

सदगुरु गाडगे महाराज कॉलेज, कराड.

Manuscript ID:

IJAAR-C130332

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume - 13

Issue - 3

January – February 2026

Pp. 161 - 164

Submitted: 25 Jan. 2026

Revised: 01 Feb. 2026

Accepted: 10 Feb. 2026

Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:

प्रा. अनंत अर्जुन निकम

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22785822

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22785822>



Creative Commons



सार:

२१ वी सदी में ऐसे गीत थे जो मन की समस्या को उजागर करते हैं। मन का यह विमर्श २१ वी सदी में तब सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण हो जाता है जब आसपास माहौल कुछ उदास हो, असमंजस की स्थिति हो, कई बार हालात हाथ से निकल जाणे का डर हो, तब यह बात हमें फिरसे सोचने पर मजबूर कर देता है कि इस मन का क्या करे। इसी बात को मध्य में रखकर मन की स्थिति का वर्णन सिनेमा में कैसे आया है। इसका विमर्श इस शोध आलेख में किया है।

मुख्य शब्द: मन, सिनेमा, समाज, उदासी, बदलाव इ.

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

प्रा. अनंत अर्जुन निकम. (2026). २१ वी सदी के सिनेमा के गीतोंमें मन का विमर्श. *International Journal of Advance and Applied Research*, 13(3), 161 - 164. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22785822>

उद्देश:

- १) २१ वी सदी के सिनेमा में आये मन का स्वरूप ज्ञात करना।
- २) २१ वी सदी के सिनेमा में आये मन की भावना का अध्ययन करना।

मूल आलेख :

२१ वी सदी के सिनेमा में 'लक्ष्य' सिनेमा २००४ में आया था जिसने उस दौर के युवा वर्ग के सामने एक निर्धारित लक्ष्य रखा। १९९० के बीच पैदा हुये कुछ नौजवान भारतीय समाज के तय किये रास्तों को नकार कर आगे बढ़कर कुछ



करना चाहते थे | इस दौर में स्थलांतर हमें सबसे ज्यादा दिखता है | वह सपनों के पीछे भागने का दौर था | पर वही असमंजस कि स्थिति जिसका जिक्र मैंने पहले किया, वही बरकरार थी | फिर भी, नौजवान जितना हुल्लड दिखते हैं उतने वह होते नहीं हैं, अगर उन्हें सही मार्दर्शन मिले तो वह अपना लक्ष्य सहज अपने आप निर्धारित या तय समय पर पा लेते हैं।

‘स्लमडॉग मिलियनेयर’ इस सिनेमा का गीत ‘जय हो’ इसी घोषणा को डोहराता है | यह नौजवान जरूर जीत को पा लेंगे हर, किमत देकर वह जी जान लगाकर, पर मेहनत से अपने आप के बल पर जीत जायेंगे | लेकिन ऐसा सच मैं हुवा नहीं, हालात कुछ बेकाबू होने लगे, भारतीय सामाजिक परिदृश्य बदल गया यह बदलाव सामाजिक भी था और सांस्कृतिक भी और खास तौर पर राजनीतिक भी | यह जो बदलाव इन्सान के सोच में आया सिनेमा में कैसे इस बात को देखा? सिनेमा के गीत कैसे इन्सान के बदलते मन को परिभाषित करते गये? इसी रोचक तथ्य कि चर्चा इस शोधलेख में की गयी है।

इस मैं हम कुछ सिनेमा और उनके गीतों की चर्चा करेंगे जो इस बात को तय करेंगे कि किस तरह भारतीय समाज के प्रति युवकों का मन था | उनके मन में क्या विचार थे | युवा क्या सोच रहे थे | उनमें जो परिवर्तन हुवा है उसमें क्या बदलाव आया उस का जिक्र करेंगे | ‘ईशकीया’ सिनेमा २०१० में आया था उस मैं युवा के उस मन की चर्चा कि है जो अपने आप को तलाश करने की कोशिश करता है | पर ऐसे हालत उनके सामने आते हैं | जो फिर से यह सोचने को मजबूर करते हैं कि आखिर इन्सान का मन आखिर चाहता क्या है ? इस सिनेमा में ‘दिल तो बच्चा है जी’ यह एक गीत है |

“ऐसे उदासी बेठी है दिल पे

हँसाने से घबरा रहे हैं।

सारी जवानी कतरके काँटी

पिरि में टकरा गए हैं।”

दिल में उभरी उदासी कि और यह गीत हमारा ध्यान आकर्षित करता है | और सारी जवानी और फिर उसके बाद भी जो उस नायक के साथ हुवा उसका बयान उस गीत में हमें मिलता है | यह २१ वीं सदी की सबसे बड़ी समस्या मुझे लगती है कि हमसे से कतराना | उदासी के जीवन से अपने आप को उभार न सकने वाली एक पिढी हमें दिख रही है | यह गीत मन के मासूम मिजाज पर कटाक्ष डाल रहा है | मन के पहलू को उजागर कर रहा है | मन की समस्या का यह यथार्थ चित्रण है ऐसा मुझे लगता है | इसमें नकारात्मकता कम है | स्वीकार ज्यादा है | दुःख कब आता है जब हम यथार्थ से दूर भागते हैं तब आता है |

“सौ दर्द हैं, सौ राहतें

सब मिला दिल नशी

एक तू ही नहीं

रूखी रूखी सी ये हवा

और सूखे पत्ते की तरह

शहर की सड़कों पे मैं

लावारिस उड़ता हुआ

सौ रास्ते पर तेरी राह नहीं

सौ दर्द हैं”...

जान -ए - मन फिल्म (2006) का यह गीत है ‘गुलझार’ ने इस गीत को लिखा है |

यह रास्तो पर भटकना क्या है ? क्यों है ? शहर पर हर बार घुमता हुवा कोई आवारा हो सकता है | या फिर सरफिरा इन्सान, या फिर खुद से हारा हुवा इन्सान, या खुद कि तलाश करता हुवा इन्सान | किसकी बात गीत कर रहा है, या फिर



सबकी बात कर रहा है। सब कुछ छोड़ देना वह भी किसी एक इन्सान के लिये क्या २१ वीं सदी का महत्वपूर्ण लक्षण दिखाई देता है।

यह भी तो उस दौर की यथार्थता थी... मैं यथार्थवाद की बात नहीं कर रहा हूँ अगर उस की बात यहाँ पर करे तो फिर विषय अलग हो जायेगा। दार्शनिक हो जायेगा, मेरा आशय उससे कतराई नहीं है।

“हमको मालूम है
इश्क़ मासूम है
दिल से हो जाती है गलतियाँ
सब्र से इश्क़ महरूम है।”

सब्र रीश्तो में थहराव लाता है... आज कल की पीढ़ी बहुत जल्दबाज है ऐसा हम अक्सर सोचते हैं... और मानते भी हैं... यह गीत उसी बात की ओर इशारा कर रहा है। प्यार को परिभाषित करने का प्रयास बहुत बार अक्सर रीश्तों को उलझा देता है। तो कैसे इस गीत को समझे यह सवाल हमारे सामने आता है। इसको बस हम इस पिढ़ी का एक लक्षण मान सकते हैं। जो इस विचार के स्वीकार को और व्यापक बनाता है।

“हुआ जो ज़माने का दस्तूर है
माँ मानी नहीं
डैड नाराज़ था
मेरी बर्बादियों का
वह आघाज़ था
इश्क़ का यह भी एक अंदाज़ था
वह न राज़ी हुए
हम भी बग़िए हुए
बेकार हम फ़रार हो गयी”...

ऐसे भी लोग हैं जो प्यार को नहीं समझ सके। प्यार हो या ख़्वाब अगर इसे नहीं समझा गया तो उसकी किमत्त उस

इन्सान को चुकानी पड़ती है और उसके पुरे परिवार को और फिर समाज को भी। इस में मन को उसकी विशालता और उसकी शून्यता को समझना रीश्तो को मजबूत कर सकता है। इस बात को समझना होगा।

२१ वीं सदी में बिखरता परिवार और ऐसे लोग जो इस प्यार के चक्कर में अपने आप को खो देते हैं। गुमनाम जिंदगी जीते हैं। कुछ तो आत्महत्या कर लेते हैं। ऐसे बच्चे हम देखते हैं जो कुछ बोलते नहीं, बस इस दुनिया से अलविदा हो जाते हैं। यह बात सिर्फ बच्चों की नहीं है कुछ उम्र दराज़, बड़े लोग भी परिवार का प्यार पाने के लिये तरसते हैं। यह इस सदी का सत्य है। यह गीत हमें उससे वाक़ीफ़ कराते हैं। क्या सिनेमा उस दर्द की बात कर रहा है अगर हाँ तो उस दर्द को स्वीकार करना होगा। मन को समझना होगा।

“कभी गर्दियों का मारा
कभी ख़्वाहिशों से हारा
रूठे चाँद का है चकोर
ज़रा से भी समझौते से
ये परहेज़ रखता है क्यूँ
माने ना कभी कोई ज़ोर
दुनिया जहाँ कि बंदिशों की
ये कहाँ परवाह करे
जब खींचे तेरी डोर
खींचे तेरी डोर
मनचला मन चला तेरी ओर
मनचला मन चला तेरी ओर
ख़ामोशियों कि सूतों में
ढूँढ़ें तेरा शोर
ढूँढ़ें तेरा शोर”



इस गीत में जैसे कहा गया है कि यह मन अक्सर
गर्दिशों और ख्वाहिशों को चून नहीं पाता। समझोता नकार देता
है और अपने अपने सपनों का आसमान बिना किसी कि परवाह
किये बिना छुता है। यही इस गीत में दिख रहा है।

आखिर मैं अपनी बात दंगल फिल्म (2016) के गीत
से समाप्त करूंगा जिसमें रीशतों में कैसे चकाचौंद कि दुनिया का
असर पड़ता है। कैसे बच्चे माँ-बाप से बिछड़ जाते हैं। शायद
यह गीत हमें रीशतों को समाज ने कि समझ दे वह नमी दे जो
किसी भी रिश्ते को मन मैं जिंदा रखने कि ताकद देता है। रिश्ता
पहले मन में मरता है। रिश्तों का यह सफर और एक गीत के
माध्यम से समझने की कोशिश करते हैं।

साँस हैरान है मन परेशान है
हो रही सी क्यूँ रुआँसा ये मेरी जान है
क्यूँ निराशा है आस हारे हुए
क्यूँ सवाल्लों का उठा सा
दिल में तूफ़ान है
नैना थे आसमान के सितारे नैना
ग्रेहन में आज टूटते हैं यूँ
हो नैना कभी जो धूप सेकते थे नैना
ठहर के छाँव ढूँढते हैं यूँ
जुदा हुए कदम

जिन्होंने ली थी ये क़सम

निष्कर्ष :

२१ वीं सदी के कुछ गीत मन के ताने बाने को
समझने कि क्षमता रखते हैं। उसी बात को हमें अपने जीवन में
स्वीकार करना होगा। यथार्थ में जीवन जीने कि कला, अपने
दुःख, अपनी उदासी, अपना आक्रोश सही तरीके से समझना
होगा। तभी हम अपने मन कि तथा दूसरे कि मन कि पीड़ा को
समझ सकते हैं। मैं अपनी बात को एक पंक्ती से समाप्त करूंगा
जो इस सदी कि नहीं लेकिन इस सदी में भी अपना मूल्य
बरकरार रखने वाली एक कविता जो पहले प्रार्थना फिर गीत
बन गयी है ऐसी वैष्णव जन तो तेरे कहीए जे पीड़ परायी जाणे
रे।

संदर्भ सूची:

- १) https://en.wikipedia.org/wiki/Hazaaron_Kh_waishein_Aisi
- २) [https://en.wikipedia.org/wiki/Dangal_\(2016_film\)](https://en.wikipedia.org/wiki/Dangal_(2016_film))
- ३) <https://www.jiosaavn.com/lyrics/sau-dard-lyrics/BRIhHB0ERgU>